सप्तमः पाठः

आरुणि श्वेतकेतु संवाद

स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतु ँ विंशतिवर्षः सर्वान् वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय। त ँ ह पितोवाच श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना अनूचानमानी स्तब्धोऽस्युत तमादेशमप्राक्ष्यः।

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस त ँ ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्। न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।।

येनाश्रुत ँ श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं विज्ञातमिति। कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति।।

न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुर्यद्ध्येतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्निति भगवा ँ स्त्वेव मे तद्ब्रवीत्विति तथा सोम्येति होवाच।।

यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन सर्वं काष्णायसं विज्ञात ँ स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं कृष्णायसमित्येव सत्यमेव ँ सोम्य स आदेशो भवतीति।।

यथा सोम्यैकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञात ँ स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं लोहमित्येव सत्यम् ।।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. श्वेतकेतुः कः? **(2020MC)**
2. आरुणि श्वेतकेतुं किम् अकथयत्?
3. कः ब्रह्मचर्यवासम् अकरोत्?
4. श्वेतकेतुः ब्रह्मचर्यवासाय कुत्र अगच्छत्?
5. आदेशः किम् अस्ति?
6. आरुणि कः?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) श्वेतकेतुर्हारुणेय आस----------ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।
(ख) स ह द्वादशवर्ष उपेत्य----------तमादेशमप्राक्ष्यः।
(ग) येनाश्रुतँश्रुतं भवत्यमतं----------आदेशो भवतीति।
(घ) यथा सोम्यैकेन लोहमणिना----------लोहमित्येव सत्यम्।
(ङ) यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन ----------आदेशो भवतीति। **(2020MD)**
(च) न वै नूनं भगवन्तस्त----------तथा सोम्येति होवाच।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।
(ख) उपनिषद् ज्ञान के लिये महत्त्वपूर्ण है।
(ग) आरुणि ने श्वेतकेतु को आत्मतत्त्व का उपदेश दिया है।
(घ) औपनिषद् दर्शन ही सम्यग्दर्शन है।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—
पितोवाच, ब्रह्मबन्धुरिव, वेदानधीत्य, कार्ष्णायसं, सोम्येति, होवाच।
2. निम्नलिखित धातुओं में लकार, पुरुष एवं वचन बताइए—
वसति, भवन्तु, कथयन्ति, गच्छतु, पठतु, हसताम्।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

छान्दोग्योपनिषद् से कोई अन्य शीर्षक पढ़कर उसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

अवेदिष्यन = जानते होते। **नावक्ष्यने** = नहीं बताते। **तथा** = ऐसा ही। **मृत्पिण्डेन** = मिट्टी के पिण्ड से। **मृण्मयम्** = मिट्टी से युक्त, मिट्टी से बनी। **वाचारम्भणम्** = वाणी का सहारा। **लोह** = सोना। **कार्ष्णायसम्** = काले लोहे को। **वस ब्रह्मचर्यम्** = ब्रह्मचर्य में वास करो। **भवतीति** = होता। **उपेत्य** = उपनयन कराकर। **अधीत्य** = अध्ययन करके। **प्राक्ष्यः** = पूछा है। **भगवः** = भगवन्। **लोहमणिना** = लोह मणि का। **नामधेयं** = नाममात्र। **नखनिकृन्तनेन** = नहन्ना। **नूनं** = निश्चय ही। **तद्ब्रवीत्विति** = वह बतलाइए। **महामना** = बड़े मन वाला। **आरुणेय** = आरुणि का पुत्र। **तम्** = उस (श्वेतकेतु) को। **उवाच** = कहा। **वस** = वास करो। **नः** = हमारे। **अननूच्य** = वेद को न पढ़कर। **ब्रह्मबन्धु** = अयोग्य ब्राह्मण। **द्वादश वर्ष** = बारह वर्ष। **उपेत्य** = पास जाकर। **चतुर्विंशति** = चौबीस। **वेदानधीत्य** = वेदों को पढ़कर। **अनूचान मानी** = वेदों का ज्ञानी मानता हुआ। **एमाय** = लौट आया। **आदेशम्** = आदेश, उपदेश को। **अप्राक्ष्यं** = पूछा है, जाना है। **अश्रुतम** = न सुना हुआ। **श्रुतम्** = सुना हुआ। **भवति** = होता है। **अमतम्** = न समझा हुआ। **अवितम्** = न जाना हुआ। **अविज्ञातम्** = न जाना हुआ। **कथम्** = कैसा, किस प्रकार।

●●